अनसोहातो

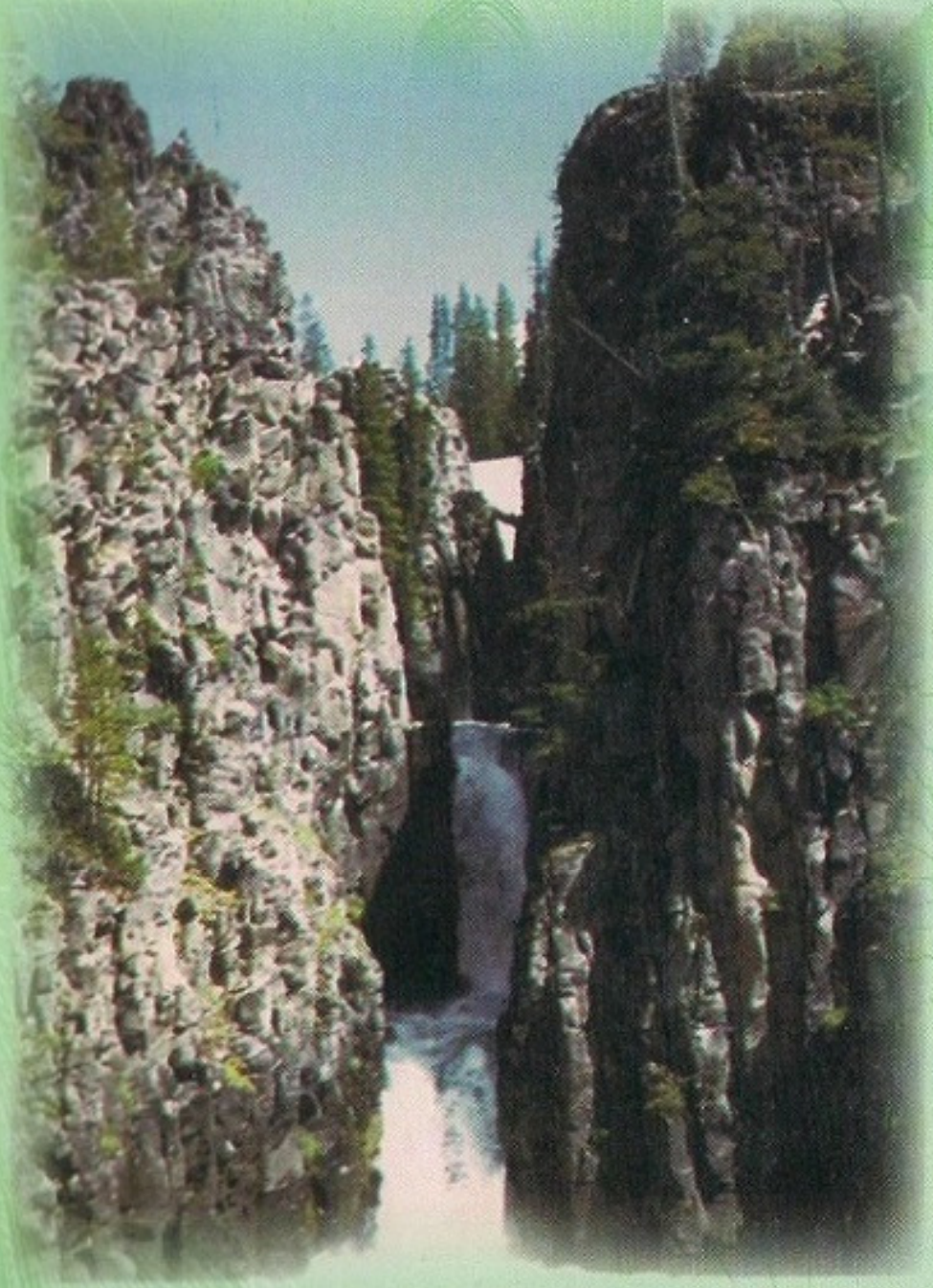

तैयब हुसैन पीड़ित

अनसोहातो
(कविता संग्रह)

तैयब हुसैन पीड़ित

शब्द संसार
पटना-800006

ANSOHATO

by

Talyab Hussain Peedit

अनसोहातो

प्रकाशन वर्ष	2011
स्वत्वाधिकार	लेखक
प्रकाशक	शब्द संसार
	न्यू अजीमाबाद कॉलोनी
	पो०-महेन्द्रू, पटना-6
मूल्य	125/- रूपया
अक्षर संयोजक	अनुकृति
	साधनापुरी,गर्दनीबाग, पटना-1
मुद्रक	न्यू प्रिंटलाइन प्रेस
	गाँधी नगर, पटना-1

जे कविता लेखा तनिक कड़ा
बाकी गाढ़ समय में बहुते कारगर रहे
'अनसोहातो' अपना ओही मौसी मरहूमा सफीजन
के
इयाद करत.....

'अनसोहातो' के सोहाय बदे कुछ शब्द

'अनसोहातो' शब्द के 'अ' से साइत हिन्दी के अकविता भा अंग्रेजी के नास्टेल्जिया के बोध होय, एह से जरूरी लागता कि अइसन भाव के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में परिखल जाव ।

आजादी के बाद प्रगतिशील आन्दोलन के सबसे बड़ त्रासदी ई रहल कि ओकरा से जुड़ल रचनाकार त सत्ता के छद्म आ जन विरोधी चरित्र के उजागर करे में लागल रहलन बाकी उनकर राजनीतिक नेतृत्व भारतीय शासक वर्ग का साथे आपन गोटी बइठावे के सुगम राह धइलक । ई आम जनता साथे धोखाधड़ी रहे, क्रांति के शॉर्ट-कट रास्ता के तलाश ।

साठ के बाद मोहभंग का स्थिति में कविता में विद्रोही स्वर उभरल जवना में किसान-मजूर आवे लगलन, लोकभाषाअन के आहट कथित शिष्टो साहित्य में सुनाये लागल ।

असल में दोसरका औद्योगिक क्रांति के बाद दुनिया के हालत बदल गइल । जिनगी के समीकरण पहिले से जादे दुरूह आ जटिल भइल । एही घरी कविता से गीतात्मक तत्व (लिरीकल एलीमेन्ट्स) दुनिया-भर में बाहर होय लगलनसऽ । एकर कारण ई रहे कि आदमी के दुख-दरद आ कठिनाई अब गीतन के अँजुरी में आँटे के सान के ना रहल गइल रहे । सुभावत: अभिव्यक्ति के दायरा बढ़े लागल । जवन कहे के रहे, ओकरा लायक शिल्प, भाषा आ कंटेंट तलाशल जाय लागल । ऋणात्मक बिन्दु का रूप में एह से रचनाकार आ पाठक के दूरियो बढ़ल बाकी एह में खाली कविये दोषी ना रहस, संस्कार युक्त पाठक के अपन संग्रहण क्षमतो बढ़ावे के रहे, काहें कि रस के निष्पति मर्मज्ञ पाठक के अन्त:करणे में हो सकत रहे, चलताऊ पाठक त एह से अछूते रहतन ।

सामाजिक, शैक्षिक आ सांस्कृतिक पिछड़ापन गुने ई समस्या भोजपुरी साथे कुछ जादही रहे । एही से एह दिसाईं ऊ हिन्दी के अनुसरनो कुछ देर बादे करत लउकल ।

कविता के मूले में ई बात होला कि ऊ 'सुन्दर' के सृजन करे आ जहाँ कहीं सुन्दरता होय ओकरा पछ में खड़ा होय, साथ ही जहाँ सायास असुन्दर

बनावल जात होय, ओकर विरोध करें। साँच पूछीं त ईहे 'पछ' आ 'विरोध' से कवि के संसार निर्मित होले । आज के संदर्भ में कविता के वैश्विक आ स्थानीय भइल समय के मांग बा ।

एह से नास्टेल्जिया में बढ़िया कविता हो सकेला, बशर्ते कि कवि के देश-दुनिया, भूत आ वर्तमान सब के पहिचान बढ़िया तरह से आवत होय ।

कविता के सृजन-शक्ति के प्राण ह– क्रियाशील जीवन के ऐन्द्रिक बिम्ब, विचार खनिज आ जीवन द्रव । कविता के प्राण-रक्षा शब्द के सतत साधना से होले । एही से कविता प्रयोजनशील होली । कवि काल के अतिक्रमण करेला । कविता अपना समय के सरोकार के मार्मिक ढंग से उठावे ली सामाजिक असंगतियन में हस्तक्षेप करेली । कविता कवनो घटना के तात्कालिक प्रतिक्रिया ना ह, ऊ ओकर नि:संग आ कलात्मक सृजन ह ।

समकालीन कविता रचनाकार आ परिवेश का बीचे एगो नया किसिम के लगाव आ ऐन्द्रिक रिश्ता का साथे संघर्ष के नया सौन्दर्यशास्त्र रचे के शुरू क देले बा । भोजपुरी कविता एह में पिछुआइल बा । ऊ त भला कहीं खुला विचार रखेवाला कुछ कवियन, पत्रिकन आ संगठनन के, जेकरा से एकरा खाद-पानी मिलत रहल आ ई कवितन के सही जुलूस में आगे बढ़ेला खार बा ।

'अनसोहातो' एही राह पर एगो छोट प्रयास ह जवन लमहर काल-खण्ड समेटले छन्दबद्ध से छन्दमुक्त तक भोजपुरी कविता के क्रमिक विकास साथे हमरा अंदर के कवियो के एह में सहभागिता के कहानी कही ।

अइसे त उमिर में बड़-छोट साहित्यकारन के भावनात्मक प्रोत्साहन सृजन का दिसाईं हमरा पहिलहीं से मिलत रहल बा, जेकरा खातिर हमर रोआं-रोआं ऋणी बा बाकी वर्तमान में सर्वाधिक बढ़ावा खातिर हम अग्रजवत् जगन्नाथ जी के प्रति श्रद्धानवत् बानीं । मनोयोगपूर्वक अक्षर-संयोजन लागी भतीजा सरीखा संजय के अलग से आभार ।

पटना,
21 सितम्बर, 2011

(तैयब हुसैन 'पीड़ित')

कविता-क्रम

श्रद्धांजलि

भोजपुरी माई के विलाप	11
दु टुक्की बात	13
बेटा मनोरंजना	15
अइसने होला बड़	16
जिनगी जे जीअल ऊ	17
माया से मन्दिर में	19
सौ साल में 'ऊ'	21

छन्दबद्ध

समकालीन दोहा	27
देश पर दस दोहा	29
सुनामी एकादश	30
गुजरात भुईंडोल पर दस दोहा	31
दाण्डी : नौ	32
फागुनी दोहा	33
साँझ-बिहान	34
बसन्त में	35
खास बात	36
का नया, नया साल में ?	38
पेड़	39
सड़क	40
कुछ शेर, शराब पर	41
गजल के बारे में	42
चान कने चिट्ठी	44
जा रहल बा बैलगाड़ी	45

जा रहल बा रेलगाड़ी 47
ए जिनगी में बड़ा जरन बा 49
हमर गाँव 50
गइल कला बबुरा बुँट लादे 52
हो गइल होई 54
विषखोंपड़ा के मन्तर 55
इयाद एहतरह 57
अपनो विकास होत बा 58
उलटबाँसी 60
राजा 61
कारपोरेटी सीख 63

छन्दमुक्त

भूख 67
बदहाल बच्चा 69
कापुरूष क्रांति 72
का अब ? 73
का करीं ? 75
लकड़बघ्घा 77
भेड़िया के नथुना घुमा देव 79
बुधिया के अखियान 81
रमुनी चिरई बनाम हम आदमी 83
एगो पलटत पन्ना 85
का बाँचल रहे ? 87
आखिर कब ले ? 89
अली बाबा चालीस चोर 92
जीअता हमरा में 94
अठगोरवा 97
चिंउटी 102
मंत्री के बेयान 106
मरल एगो फूलकुमारी के भूख से 107

श्रद्धांजलि

पं. रामधरीक्षण मिश्र के प्रति :

भोजपुरी माई के विलाप

काल्ह के 'गोरखपुर' अब के 'कुशीनगर'
में बा 'बरियारपुर' गाँव एक मकनवां ।
लमहर खेती-बारी अन-धन से भरल
खाले जहाँ बरध कइक दरजनवां ।
बाग आ बगीचा बाटे, बाटे ढेंकी आ इनार
इहें 'जगदेव' जी के भइले ललनवां ।
तिथि नामनौमी रहे उन्नीस सौ अट्ठावन के
विक्रमी संवत् अउर चइत महिनवां ।
बी.ए., एम.ए. फेल जेकर योग्यता के आगे
वइसे रहे परवेशिके ले साथ परमनवां ।
स्वाभिमानी अइसन कि हाथ फइलावे नाहीं
टिकट होय चाहे बकसीस के समनवां ।
करे फलाहार, रहे थोड़के बसनवा में
कविता में अलंकार केशव-समनवां ।

'आगमन सुनि आग मन में सुलग जात'
पहुँचे जो केहू कने 'पेटुआ पहुनवां' ।
बाकी सोचे लागी जो बिदाई देखे बेटी के त
'कवना दुखे डोली में रोअत जात कनियां' ।
'अमृत ध्वनि छंद' में चहेटे लोभी समधी के
बोले 'अंट-संट', भेजे 'लट्टुद्धर' जवनवां ।
देखे आदमी में 'अपना साँप के सुभाव'
अउर देखे ऊ 'गाँव का ओर' सुख के सपनवां ।
देके मात्र 'शिवजी के खेती', 'कागज के मदारी'
छोड़ि गइल ढेर अप्रकाशिते रचनवां ।
अचके में भाग गइल साल सनतानबे में
जदपि आदर देले विभिन संसथनवां ।
रोअतारी भोजपुरी माई करी के विलाप
बेटा 'धरीक्षण' रहे कोखी के रतनवां ।

भिखारी ठाकुर के प्रति :

दु टुक्की बात

साइन्स कहेला–
कवनो चीज के नाश ना
रूप-बदलाव होला,
भिखारी मरल नइखन ।
ठोस जब स्थूल रूप छोड़ी
ओकर फइलाव धरती से आकाश नापे लागी
भिखारी आज जन-जन के भावना में बाड़न ।
तू मानऽ भा मत मानऽ !
हम त देखत बानी–
सूरदास के कनझप्पा पेन्हले
ठेहुना तक धोती, मिरजई आ चश्मा में ओ आदमी के
जवन समैना से बाहर ठसम-ठस्स भीड़ में
घेराइल
पहिले त गंगा, जनमभुईं, कृष्ण आ शिव के कीर्तन कइलक ह
फेर राम के वंशावली के चिट्ठा लेले ठार बा ।
'भाई-विरोध' के कुटनी
'बेटी-बेचवा' के 'पंडित'
आ 'बिदेसिया' के 'बटोही'
का भुला सकेला ?
जब ले कोख से जनमावल लाल
ओकरा माई के हवाले ना होई
दहेज के बूढ़ राछस कमसीन बेटी के लीलत रहीहंन
मेहर का चलते गंगा असनान गएल माई
पानी में ढकेल दिहल जाई

आ
बेकती-बेकती के घर
कवनो बँहरवासू दुश्मन फोड़त रही ।
एह से आवऽ !
हँसा-हँसा के पेट फुला देवेवाला
ओ लबार के धँसल पेट कावर ताकीं
औरत के सुख-दुख भोगेवाला जवान लइका के
बिलखत बीबी पर गौर करीं
घर में बेमार छोड़ आयेल बाल-बच्चा वालू
एह सरंगी-सितार पर ताल तुड़त बुढ़ऊ के
दरद अंगेजी
ना तऽ,
भिखारी ना रहिहंन, ना रहिहंन, ना रहिहंन
चाहे तू उनका के मंदिर में कैद क दऽ
भा उनका पुतरा के
जयन्ती का बहाने बटोराइल लोगन के गोल में
साले-साल जेतना जगेह खोलऽ-तोपऽ !

मनोरंजन प्र. सिन्हा के प्रति :

बेटा मनोरंजना

कविता बखानत खानी करे जोकरई जवन
होके अंगरेजी, बोले हिन्दी-भोजपुरिया,
गान्ही के सभा में करे पाठ जे 'फिरंगिया' के
कवि, नाटककार, लेखक अकिल भरपुरिया,
लिखे 'झाँसी-रानी' पर पैरोढी 'कुँअर सिंह'
गावे 'कउआ भोरे-भोरे बोले मोरे अंगना',
रोवेला देहातिन संघे 'रेल सउतिनिया' पर
थोड़े में बहुत रहे 'बेटा मनोरजना' ।

आचार्य महेन्द्र शास्त्री के प्रति :

अइसने होला 'बड़'

एगो झमाट बड़
(जवन देखे में ठूँठ लागे)
महराजगंज के नगीच
रतनपुरा (सारण) में
वैशाख कृष्ण त्रयोदशी संवत् 1985 वि. के जामल
सारण, सीवान, गोपालगंज, हाजीपुर, पटना,
वाराणसी, हरिद्वार, देवघर, कलकत्ता तकले पसारा कइलक
जेकर एगो डाढ़ छुआछूत-उन्मूलन,
दोसर नशाबंदी, तीसर दहेज-विरोध
चउथ स्त्री-शिक्षा जइसन
समाज-सुधार-आन्दोलन कावर बढ़ल,
शेष पत्रकारिता, शिक्षण आ पुस्तकालय-आन्दोलन कावर
भोजपुरी के गतर-गतर में
आपन बड़ोह रोप के
31 दिसम्बर 1974 के
देखते-देखते नजर से अलोपित हो गएल ।
अबगे त रहे !..... अ.....ब.....गे.....त.....
एक साथे खोजत हजारहन आँख
आ
हर आँख में लउकत
असलकी पेड़ का रूप में
रोपायेल बड़ोह !
हँ, बरगद अइसने होला
अइसने होला 'बड़' ।

बाबू रघुवंश नारायण सिंह के प्रति :

जिनगी जे जीअल ऊ

अइसे त बलि लेके
निकलल ई नदिए
बाकी अइसन बहल जवन भोजपुरी-गंगा
ओ आरा के 'पिपरा जयपाल' का भगीरथ में
सँउसे हिमालय के पत्थर पथाइल
ना रोक सकल मुँह तबहूँ
रसगर गंगोतरी के !
खोज भरल लेख
कइल कोसिस भगीरथ के
निकलल पतिरका
बनि 'भोजपुरी' भागीरथी ।

नया टेम्ह उसका के
जगह-जगह बारल
ह तारल तप से केतना
लहटत लिखवइयन के
चलत-चलत धारा ई
आपन बनावत राह ।

कठही तन
लंग खात दहिना अलंग से
धोती-कुरता-टोपी साथ
मोंछ फहकारत, लाठी टिटकावत ।

रास्ता के मोल मिलल दुख
आ बेमोल मिलल अपजस
भा फूल नियर झर आइल
जस या कि लछिमी
का मोह सकल गाँवों से
शहर तक ओ योगी के ?
के जारो घर आपन
पगला के कहला पर !

'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' का सपना में
सूत गइल आखिर तब
तीत-मीठ बकत-बकत
जनमे से गाँथल
रे 'जिनगी जे जीअल ऊ'
जइसे के तइसे धर
कबिरा के चादर-अस ।

राघव मिश्र 'मुँहदुब्बर' के प्रति :

माया से मन्दिर में

माया से मन्दिर में
मन्दिर से माया में
अबकी ना मंदिर ना माया
बस छाया में
झोंपड़ी बना के
जवन राघव गँजेरी एक
रहत रहे–
सुनलीहं
बुढ़वा ऊ नइखे.....!

धत् !
भोजपुरी मरल ना त
मरी भला ऊ कइसे ?
अक्सर
कवि-गोष्ठी में
धोती-कुर्ता पेन्हले
पातर पताह देह
ढहत ढिलमिलात
बिना नौ-छव के–
'हुरपेटीं मत मुँहदुब्बर के

हई चार सौ बीस के डाली लीं.....'
'जब कोई कहेला क-वि-ता
त समुझ ना आवे
कि गज बताईं कि फित्ता ?'
ना भूली
त भूली ऊ कइसे ?
हँ,
रहे मस्तमौला
भइल बा अलोपित
त लवटी ना जिद्दी ह ।
तबो ओकर भाँजल
लुकारी हउ कागज पर
जरत बा
जरावे ला जहर
एह समाज के ।
होखे बउसाव
त जुटावऽ ना जरना
बस अगजा में
उठी जब लहास खूब ऊपर
समुझ लीहऽ
कवनो पहलाद रहे आइल
हरनाकुस के मारे
बन 'मुँहदुब्बर' ।

शहीद भगत सिंह के जनम-शताब्दी पर :

सौ साल में ऊ

महज चौबीस साल के लइका
जे लइकाईं में
जालियावाला बाग के
लाल माटी सुंघले रहे
जो
एतना खतरनाक
हो सकेला
कि
ओके साथियन समेत
सब नियम ताखा पर रखत
एक दिन पहिलहीं
साँझ के
फाँसी पर लटकावल
विदेशी दुश्मन जरूरी समुझलन
आ
'इरविन पैक्ट' में
तबके देशी दोस्तो
दफनावल बेस्तुर
त
हमनी
समझ सकीले
ओकर अहमियत

ऊ
ना अवतारी रहे

ना चमत्कारी
ना इलहामे भइल रहे ओकरा
असली आजादी के,
हँ,
समय से कुछ पहिले
पहिचान लेले रहे
ऊ जरूर
राजनीति के सब
धंधा, फंदा आ हथकंडा
जेह में
निरीहजन के
कानूनी चूहादानी में
फँसा के
मारल जाला
आ बिल्ली याकी दिल्ली सरकार
अहिंसा के चोंगा गँथले
भगतिन बनल रहेली

एही से
ऊ
बहिर अदालत में
जोर के धमाका कइलक
इतिहास के
खूनी क्रांति देलक
आ 'इंकलाब-जिन्दाबाद' में
लिखलक
शोषण-मुक्त समाज तक
लगातार
बदलाव के इबारत ।

अइसहीं ना
सौ साल में
ऊ अउर निखरल ह
नवजवानन में
लतर नियर
पसरल ह
जहाँ
तबे
देशभक्ति में
पूँजी आ धरम के घालमेल रहे
आज
दांडी-यात्रा के 75' वीं वर्षगाँठ में
आयोडीनवाला निमक के
निमकहरामी
उहाँ
सत्याग्रह के शताब्दी में
उदारीकरण के
नया गुलामी
उतार फेंके के सोचत लोग
'लगे रहो मुन्ना भाई'
के गाँधीगिरी पर
भले हँस लेवस
बाकी बूझत बाड़न
'रंग दे बसंती'
के
जरूरत ।

छन्दबद्ध

समकालीन दोहा

आज इहाँ आ कल उहाँ, रोज युद्ध के नाच
होत महाभारत तबो, शकुनी जाता बाँच

जवना बड़-तर साल-भर रहे मेल के खेल
अब ओह पर बा छा रहल, बैर-फूट के बेल

बहिरा बा दिल्ली अउर बहिरे राज बिहार
जनता बोली जोर से तबे सुनी सरकार

गंगुआ राजा बनल बा, परजा बाड़न भोज
कहीं भोज पर भोज बा, कहीं ओज पर ओज

कुछ फाड़ल कुछ फट गइल संस्कृति के अध्याय
अब त अदमी हो रहल बा, पशु के परयाय

जहर घोराइल रंग में, पिचकारी में नाग
भूलऽ जे खेलत रहे हिलमिल पुरखा फाग

बचबऽ आखिर के तरह ? डेग-डेग पर घात
हर छाता में छेद बा, बेमौसम बरसात

सुविधन के जे कर रहल बा डट के उपभोग
हमरे-तोहरे बीच में बाटे अइसन लोग

ई आन्हर के राज बा, अन्हरे बा सरकार
इहाँ जे बेची आइना, चउपट कारोबार

अब न बनारस के सुबह अउर अवध के शाम
दूनों जगहा कर रहल बा बादर आराम

पहिले धनिक-गरीब, फेर बड़ आ छोट समाज
राजनीति के कोढ़ अब, जातवाद के खाज

जब-जब पछेया चलत बा, चीखत लागे नीम
जब से ओके ले गइल, बहुराष्ट्रीय टीम

बुलबुल पासे बघनखा, कोइल पास गुलेल
हर डाली पर बइठ के उल्लू करे कुलेल

सातों रंग बिखर गइल, इन्द्रधनुष के आज
एह सीमा तक हो गइल ई बदरंग समाज

चिंउटी से हाथी मरे, छूछून्दर से साँप
बाकी बे कारण मरत बा ई मनई आप

एक तरफ जंगल कटल, अउर खुलल उद्योग
दोसरा ओर उगा रहल गमला में वन लोग

जब से भारत में भइल महामुर्ख के खोज
तब से बइठल डाढ़ के काली काटे रोज

रोहित से लगलन कहे हरिश्चन्द्र हो खिन्न
हम भोगलीं दुख, लाल तू रस्ता चुनले भिन्न

खुद ना चललन जे ओकर देश चलावल काम
एक त करिया रंग, फेर कमरी ओढ़ले श्याम

दुनिया के दादा रहे बनल काल्ह जे आप
ओकरो देखऽ मिल गइल आज बाप के बाप

देश पर दस दोहा

जे जनता से जात बा, लेत आँख बा फेर
कइसन उल्टा फर रहल, आपन रोपल पेड़

ना देशे में अन्न बा, ना कपड़ा, ना मकान
अखबारन में छप रहल, भारत देश महान

एक कम्पनी कर गइल दू सौ साल गुलाम
अब त कम्पनी सैकड़न, आ मस्जिद में राम

कहाँ निशाना बा सधल, होता कवन शिकार
ईश्वर-अल्ला एक ही, बन्दा में तकरार

जेकरा दल में ना खुदे लोकतंत्र के नाम
ओही श्वान के पास बा, लोकतंत्र के चाम

हर करिया करतूत बा जेकरा घुट्टी आज
उहे बोलावत फिर रहल, नैतिकता के राज

करिया से नफरत करे जवन गोर तहजीब
हम करियन के देश में संस्कृति उहे करीब

सवासेर गेंहू जहाँ दे ना सकल सन्तान
विश्व बैंक के करज का दी ई हिन्दुस्तान ?

नारी के पूजा कहाँ ? कहाँ देव के वास ?
उहे वर्ण, नारी-दहन, मनुज-मनुज के दास

गलत किताबन में इहाँ होत सही के खोज
कइसन ई हठयोग ह ! कइसन बा ई लोग

सुनामी एकादश

पेड़ कटल, नदियो बन्हल, रोड़ा भइल पहाड़ ।
आपन चोट सोनार के, सागर-लहर लोहार ।।1।।

भइल सवा सौ साल जब, असहीं गिरलक गाज ।
कुंभकरण के नीन से जगलीहं हम आज ।।2।।

ऐटम बम से हो सकल ना जेतना सन्हार ।
ओह से जादे कर गइल नाश सुनामी ज्वार ।।3।।

पानी के देवार जब चलल जहाजी चाल ।
अच्छा-अच्छा के भइल, पल में खस्ता हाल ।।4।।

मरद-मेहर, भाई-बहिन, बेटा हो भा बाप ।
गिन-गिन के सबके मिलल बिछुड़न के संताप ।।5।।

अबहूँ लाश देखा रहल बा समुद्र के धार ।
तबहूँ कहवाँ होत बा मउअत के एतबार ।।6।।

कहूँ बचावल जीव-जन्तु, कहीं बचल कोई आप ।
भइल कहीं वरदान कुछ, भइल कहीं सब शाप ।।7।।

अलग-अलग बा देश आ अलग-अलग बा लोग ।
एक दसा सबके मगर, लाखन में कुल योग ।।8।।

धरती के जे पास बा, धरती जेकरा पास ।
ओकरा व्यापल पहिलहीं विपदा के एहसास ।।9।।

लाल इसाइ के मिलल माई जंगली जात ।
समुझे के चाहीं अबो धर्म के असली बात ।।10।।

पर्यावरण चेता रहल, हमके बारम्बार ।
बाकी हमनी दुखो में खोज रहल बाजार ।।11।।

✸

गुजरात-भुईंडोल पर दस दोहा

लइकन के उतपात से गइली जब रिसिआय ।
होके खीसे भूत तब कँपली धरती माय ।।1।।

चाहे असम, बिहार हो या हो उत्कल, बंग ।
धरती जब-जब चंग-अस, मनई कटल पतंग ।।2।।

सुरसा अइसन आपदा देत चुनौती खार ।
जूझे से कतरा रहल, महावीर सरकार ।।3।।

कुदरत के कोसत, कहत पूर्वजन्म के भोग ।
ढाँकत आपन ऐब बा, बाँचल बड़का लोग ।।4।।

कफनो बेंचत में जहाँ काँपत नइखे पाँव ।
चलऽ देखाईं हम तोहें गाँधी जी के गाँव ।।5।।

सँउसे दुनिया सोग में, साँसत में गुजरात ।
अइसन में भी बेफिकिर साधु कुंभ नहात ।।6।।

गावत 'वन्दे मातरम्' लइकन भइलन लाश ।
विद्यालय मलबा भइल, तम में गइल प्रकाश ।।7।।

पिछला अनुभव साथ जब, भइलीं काहे फेल ?
चासनाल[1] के बाद फेर बागडीह[2] के खेल ।।8।।

बढ़ी टिकस, राहत भरी कथा बनी भुज-कच्छ ।
बाकी नैतिकता घटत बनी सवाल समक्ष ।।9।।

पूछी नयका आदमी पढ़-पढ़ के इतिहास ।
कुछ अधिनायक देश के, बाकी काहे दास ।।10।।

✹

1. 'चासनाला' एगो कोइला-खदान के नाम ह जहाँ पानी भर गइला से सैकड़न आदमी मर गइल रहस ।

2.धनबाद के पास के कोइला-खदान जहाँ गुजरात-भूकंप में पानी भरल आ मजदूर मारल गइलन ।

दाण्डी : नौ

सन् सतरह के साल आ चम्पारण के गाँव ।
गान्ही जी देखले रहस, घेघा आ फिलपाँव ।।1।।

फेर त हाट-बजार में निमक बिकाइल लाल ।
अइसे आयोडीन खा, लोग भइल खुशहाल ।।2।।

सूखल रोटी निमक से भिखमंगो खा लेव ।
बदला में जजमान के दिल से आशीष देव ।।3।।

फेर आइल सन् तीस आ बनल नमक-कानून ।
अपने गृह-उद्योग के भइल देश में खून ।।4।।

बापू पर एह बात से अइसन चढ़ल जुनून ।
गइलन दाण्डी-सिन्धु-तट, अउर बनइलन नून ।।5।।

बाकी इरविन-पैक्ट में, साइत रहे कुटेव ।
फाँसी पड़लन भगत सिंह, राजगुरू, सुकदेव ।।6।।

अब पचहत्तर बरिस पर दाण्डी के फेर इयाद ।
ऊहो जब सब हो गइल लघु धंधा बरबाद ।।7।।

टाटा-बिरला के इहाँ निमक बनल बा दास ।
पुड़िया में बा बन्द आ दाम छुए आकाश ।।8।।

निमको पूँजीवाद में पूँजी के बा साथ ।
जे दी अधिका दाम ऊ ओकरे आई हाथ ।।9।।

फागुनी दोहा

जाड़ गइल, गरमी चढ़ल बीतल पूरा साल ।
तबो आँख डब-डब रहल, सूख ना पावल हाल ।।1।।

लोगन ला मधुमास ई, हमरा ला पतझाड़ ।
होई कहीं फुलात ऊ, हम बबुल-अस ठार ।।2।।

झनकत झाल-मजीर आ ढमकत ढोल-मृदंग ।
हम बिटोर के बिपत अगिन, लहकीं ओकरे संग ।।3।।

कहाँ अबीर-गुलाल-रंग ? कहाँ सती शिव-संग ?
होरी दूर असाम में, धनिया घर में तंग ।।4।।

शंकर के करजा अबो ज्यों के त्यों मौजूद ।
सवा सेर गेहूँ उहे, उहे सूद-दर-सूद ।।5।।

कइसे किनो हमीद अब दादी सरजाम ।
असली चिमटा ब्लैक में दोगिना-तिगुना दाम ।।6।।

रामायण उल्टा भइल सिया ना सती कहाय ।
रावण जब चाहे हरे, हरिजन गाँव जराय ।।7।।

बुधिया तड़पत प्रसव में, घीसू-माधव मस्त ।
मउअत सस्ता रे इहाँ, जिनगी बड़ा शिकस्त ।।8।।

फागुन आवे चइत या इहाँ त एक समान ।
फगुआ कल्ह ना आज ही पुआ-पुड़ी-पकवान ।।9।।

देश तरक्की कर रहल, हम काहे विपरीत ।
सुनलीहं दरिया भरल, हमहीं गइलीं रीत ।।10।।

साँझ-बिहान

तुरते के बतिया ह पिपरा के पतिया पर
चरइत चिरइयंन के शोर भइल,
अंगना से दुअरा ले, खुरपी से फहुरा ले
लोगवा के घर-घर बटोर भइल,
लउकत बा उपरा मइलकी चदरिया पर
टटके अनेरिया के गोर धइल,
निसदिन के चसकल रे बड़की भँइसिया
त आजो के दिनवा सहोर गइल ।
दिन गइल, साँझ भइल !

मियाँ के मुरुगवा, मिसिरजी के सुगवा
में 'टेंव-टेंव', 'कुकुरकूँ' के जोर भइल
अबगे के झपकल पपनिया में धनिया के
कइसे दो हुटकुट के चोर गइल,
नयकी बेयरिया के गमकल अँचरिया
त देखऽ ना तरेंगनन के ठोर मइल,
चमकत बा गोरकी बहुरिया फुनुगिया पर
मोतिया मंगइलक के मोर धइल ?
रात गइल, भोर भइल !

बसंत में

[1]

परती पर हरियर कालीन बिछल
नया टंगल बगियन में पल्लो के झाड़
जार के बिदागी में फुलवा सजवल्क के ?
घमवा के चढ़ता बोखार ।

[2]

महकत बा गम-गम शराब खानी कहँवादु
गुन-गुन सरंगिया के तान,
करिखाही कोइली के मोजरा से गँउजत बा
पछेया के सँउसे मकान ।

[3]

सेमर के घेरले बा ललकी सिपहिया
त महुआ के टपकत बा लोर,
किलकेली हँसुली ले जौ में गुजरिया
पपिहरा के लउके ना भोर !

[4]

दिनवा पहाड़ चढ़े, साँझ बाँझ गरदा से
गावे जँतसरिया में रात
केहू के कन्हइया ना फगुआ में अइले
नवमिए में कोई राम जात ।

खास बात

दिन दूर जात बा
पीठे प रात बा
परछाइयों अपन
रे आह-पाँत बा

पूरब के भइल खून
अबो सूख ना पावल
कि लऽ ! लहू-लुहान
पछिम होत जात बा

ई हादसा के सूत बा कातत कवन कबीर ?
जिनगी से असमसान ले तानी तनात बा !

सीता के जरल आग
ना ठंढा भइल कबो
अब तेल से ऊ लाफ
अउर लहलहात बा

रावण के बात छोड़ीं
समुन्दर के पार बा
शंबुक के गला राम के
हाथन कटात बा

पंडुक के बेंधल देख के जे फूट के बहल
अब डबडबा के आँख ओकर सूख जात बा !

आदम से आज ले
जे पयम्बर देले सबक
दाता इयाद बा आ
दान भूल जात बा

मजहब के आँख आदमी में
का लगल कि अब
अपना जगह प लोग के
अनका जनात बा

कमजोर जन के तोख ला ईश्वर गढ़ल गइल
बा साफ कि बरियार से उ मात खात बा !

फेंकऽ लिखल हिसाब
अब मुंशी के बही के
रहलो प थाह लइका
जहाँ डूब जात बा

पंडित के सिखावल सुआ
कबले करम पढ़ी ?
अपना प भरोसा करऽ
ई खास बात बा !

अन्हरा घरे के भूत से डरबऽ कहाँ-कहाँ ?
मन के भरम ह साँप रसी लउक जात बा !

का नया, नया साल में

पूछता किसुना का नया, नया साल में ?

लोगन के लेत-देत रस्मी बधाई या
लागल दुकानन पर कार्डन के टाल में ?
पूछता किसुना का नया, नया साल में ?

उहे आसमान रही, ओसहीं सूरुज उगिहें
धरती पर लोग रही पहिले-अस हाल में !

मोहना फेर रधिया के लिख के पठाई कुछ
रधियो सजाई फेर कुछ अपना बाल में !

फेर कवनो बुधिया परसौती में मर जाई
घीसू-माधव नाची पी के महाल में !

पहली के नेता कन सेठ जाई साहेब-संग
सालों-भर जनता बितइहें पयमाल में !

भारत के लोग के भुलाई कुछ मजहब में
बुश के काला लउकी फेर कवनो दाल में !

दादा गुमाश्ता आ बाप नू किसान रहस
बेटा मजदूर होई समये के चाल में !

सोची कबीर कोई अपनो जरा के घर
लैस दीं लुकार देश-दुनिया के जाल में !

पेड़

कल कट गइल जे आज उहे लग रहल बा पेड़
अदमी नियन ए देश में लगभग रहल बा पेड़

केकरा के देवो दोष ऊ टांगी के कि खुद के
अपने ठगा रहल बा, खुदे ठग रहल बा पेड़

बन्हले झमाट भाग रहल ऊपरे ऊपर
आ डाढ़-पात बिन जमीन टग रहल बा पेड़

हउ पुल नियन पड़ल आ दूरी पाट रहल बा
हइ राह में पड़ल आ रोक पग रहल बा पेड़

गाड़ी प कबो नाव, कबो नाव प गाड़ी
सूतल बा कहीं, अउर कहीं जग रहल बा पेड़

दब-दब के बनल कोयला, दब-दब के ही हीरा
एके करम में रोय आ उमग रहल बा पेड़

कहँवा बुताइल आग ए बरसात-रात में
उल्टे त जुगनुअन में जगामग रहल बा पेड़

हर साल पांग दीं, तबो फेर-फेर पनप उठे
केतना लहू बचा के ई रग-रग रहल बा पेड़

बेसकीमती नजर ह सभ्यता के पढ़े ला
इतिहास के मुनरी में जड़ल नग रहल बा पेड़

ऊपर से भले लाग रहल बा अलग-अलग
भीतर से मगर असल में एक लग रहल बा पेड़

सड़क

गाँव से चल के दिल्ली ले आइल सड़क
साँप या सीढ़ी बन के भेंटाइल सड़क

काट के जड़ से रोपल गइल रोब से
पास के पेड़ पर तरस खाइल सड़क

कतहूँ अवरोध आइल, अलग हट गइल
फेर नया रास्ता खोज लाइल सड़क

मोड़ आइल, मुड़ल थोड़ा तिरछा भइल
ढाल उतरल त लागल पराइल सड़क

जहवाँ सुनसान देखलक त चुप्पे सुतल
संगी भूखे बा, बाटे भुखाइल सड़क

कवनो मउअत में अपनन से जादे रोअल
अउर बरियात में खिलखिलाइल सड़क

जबकि पथरन में खोदल नया नाम बा
तबहूँ लागेला केतना चिन्हाइल सड़क

कबसे दूरी घटावत रहल लोग के
बाकी मनई के ना जोड़ पाइल सड़क

कुछ शेर शराब पर

[1]

बोतल उठाके हम पिये के चाहते रहीं
कहलक केहू कि आज अजब बात हो गइल,
बा ढनढनात खालिए भट्ठी शराब के
जे कुछ रहे शराब, से बोतल निगल गइल !

[2]

हमहूँ नजर भिरा के अइकलीं अगल-बगल
बोतल रहे, बरतन रहे, अदमी निमन-जबून,
सोचलीं कि बात साँच ह कामरेड यार के
सब लोग पी रहल बा साइत बोतले के खून !

[3]

कुछ के बदनाम करे के भी एक हद होला
जे जियावे ऊ भला बिख-समान कइसे बा ?
पी के देखीं ना एक घोंट पता लग जाई
कि रंगल पानी ई मुर्दन के जान कइसे बा ।

[4]

ओह से अच्छा होइ कवन घड़ी ?
जब हाथ में आ जाए लाल परी !

[5]

गारी ना द शराब के, ई ह ऊ मतारी
बदमास बेटो के सुतावे ठोक-ठोक के ।

गजल के बारे में

बसत आइल जे फूलन के नगर में
उड़ल तितली संगे सहमल लजाइल
हमेसा प्रेमियन के मुँह से निकलल
आ नखरा में परेमे-घर पोसाइल
जो धोखा से विरह के तीर खाइल
तड़प उठ्ठल, हरिन-सन छटपटाइल
कही ले एह कदर नाजुक मिजाजी
गजल लेके पछिम से पुरुब आइल

इहाँ आके भइल हिन्दू आ मुस्लिम
भा हिन्दुस्तान संग खुद भी बँटाइल
कबो भोपाल में बन गैस रीसल
लड़ल भाई से, कटलक आ कटाइल
बहुत रोअलक बिदेसी के वियोगे
भा बन के सती नारी जर-भुताइल
गरज कि भावना-संग सोच बनके
ना कवना-कवना खूँटी में टंगाइल !

असल में झूठ जे आकाश धाइल
बहुत जल्दी जमीं पर लवट आइल
धरम के हाथ में पड़ियो के ई
बेचारी ना दे उपदेश पाइल
आ अब त घर एकर फुटपाथ पर बा
क्षुधा एकर बा रोटी बिन तँवाइल
मगर अलचारियो में दम त देखीं
बा हर जायज लड़ाई में समाइल
बा जानुक गम के गुदरी ई गजल अब
गरीबी जेके ओढ़ल भा बिछाइल ।

चान कने चिट्ठी

चन्दा मामा !
ना हम रूसी, ना अमरीकी
तोहरा से हमरा बा
पहिले से नजदीकी ।

एह नाते हम
तोहरा पास पेठाईं पाती,
सिधुआ तू आ
बाटे लोग इहाँ उतपाती ।

सुनलींहं जाई
एह धरती से कुछ टोला,
ले गोली-बन्दूक
अउर बारूदी गोला !

मार भगवलक
चरखा, चन्नन, बुढ़िया दाई,
अब ई हमनी से
मामा, तोहके बिलगाई ।

जा रहल बा बैलगाड़ी

जा रहल बा बैलगाड़ी
सो रहल ओपर सवारी
मस्त गाड़ीवान बा
असमये पी के आज ताड़ी !
जा रहल बा बैलगाड़ी !

चले के आदी बा दूनों बैल
चलते जा रहल बा
नया लइका झूल के
गच्चा प गच्चा खा रहल बा
राह देखलइलक .जवन
ऊ लालटेन टंगल पिछाड़ी !.....

गरम चरचा कर रहल बा
पेड़ पर बइठल परीन्दा
नोकरी कुछ के लगल बा
अधिक के छुटल बा धन्धा
चल रहल पहिया खटर-खुट
उड़ रहल बा धूर भारी !.....

कब तलक एह चाल से
पहुँची भला अपना ठेकाना ?
दिशा ना मालूम गाड़ीवान के !
अटपटा गाना !
कह रहल घंटी के 'टुन'
खतरा में बा सौगात सारी !.....

झुकल घर ओने आ
फइलल खेत एने रही कबले ?
मियांपुर, पारसबिघा, नगवा
के धरती सही कबले ?
बेखबर सबसे मगर
चलते चलत जाता अनाड़ी !.....

जा रहल बा रेलगाड़ी

जा रहल बा रेलगाड़ी !
'कूऽ..... कू-कू' सीटी बजावत
धावइत सरपट बेचारी
जा रहल बा रेलगाड़ी !

राहता बा कठिन अइसन
तेग के हो धार जइसन
अउर बाधा हर कदम पर
मरे के डर तबो कइसन ?

दूर बा मंजिल, लदल बा
जिन्दगी के बोझ भारी !.....

मुठी-भर सुख, ढेर दुख
बाटे सफर में साथ एकरा
तूड़ के नाता न जाने
कहाँ ले जाई ई ठिकरा ?

तन भले एह में मगर
मन असम, दिल्ली या अगाड़ी !....

छुटल घर आ गाँव पीछे
जाने का-का छुटल जाये !
नदी-नाला, खेत, जंगल-झाड़
फेर-फेर पास आये !

उड़त चिरई सपन जइसन
रात अस लमहर पहाड़ी !.....

कल से खत सब तार कह के
डाकखाना में पड़ीहें
अउर थोड़ा लिख के
बेसी समुझला के हठ करीहें

शहर के मेला में खोजी
मन-हिरामन फेर सवारी !
जा रहल बा रेलगाड़ी !

ए जिनगी में बड़ा जरन बा

ए जिनगी में बड़ा जरन बा !
माघ-पूस के पाला गिरके जब दुनिया के धमकावेला,
रात अन्हार, चिन्हार समुझ के मन हमार मंगल गावेला,
जेठी दुपहरिया, नागिन के गरम साँस लेखा फुफकारे,
परिहथ हाथ, आँख बैलन पर, गोर सिराउर, मुँह पुचकारे–
चल भादो के कादो आई, झमरत सिरपर रही बदरिया
आसमान के कजरी से लागी किलके सब ओर उमिरिया
सुख बाकिर बखरा में नइखे, हमनी कें हिस्से अइसन बा !
ए जिनगी में बड़ा जरन बा !

जेकर हूनर के कवनो जुग में केहू ना राम चुकाई,
महल-दुमहला, सतमहला, जेकरा करतब के कठिन कमाई
ताजमहल, मीनार, किला ललकी जेकरा मेहनत के फल ह
ओकरा चारों ओर बनल पेटे खातिर दुख के दलदल ह
गरमी-सरदी-बरखा में साथी बा, पेड़न के परछाहीं
एगो जून भरत नइखे, अइसन बइमान छुधा के खाई
फूल लगावे जे दोसरा के, ओकरा ला झरकट के वन बा
ए जिनगी में बड़ा जरन बा !

ढाका के मलमलवालन के, काट रहल के अंगुठा निसदिन ?
बादशाह के बेटी ला के भेज रहल बा, बस्तर बिन-बिन ?
के दुरपति के लाज हरेला, जोर लगवले बा आँचर में ?
समता के कान्हा के, के बिलमले बा बीचे पाँतर में ?
एक तरफ चिथरा पर पेवन, एक तरफ थानन के गाँती
अपन सवारथ के दहार में, हमनी के के होई संघाती ?
कहीं कहाँ ले, मुअलो पर ना तन तोपेला जुरत कफन बा
ए जिनगी में बड़ा जरन बा !

हमर गाँव

दुअरा पर सूरुज
पिछुआरे में चान
अंगना में हारल हियाव
हमर गाँव !

राजा के छोटकी मेहरारू
कउआ हँकनी
चम्पा के जा-जा फुलवावे,
घूरा पर दाना चिरइयन संग खोजे
त टोला के लोग दुरदुरावे
साँसत के पहिला पड़ाव
हमर गाँव !

मोती के मालिक
हीरा के हकदार
गिने फाटल बेवाय खाली हाथ,
भाग, भगवान, ओह जनम के कमाई
महभारत में अर्जुन चकरात
जूआ में पाण्डव के दाँव
हमर गाँव !

डमरू के डम-डम
आ लोग खमाखम
कवनो तेलीया मसान गुरु कन,
चेंट से बिला के चली जात दूर खोंरढ़ में
पइसा के खेल नजरबन्न
हिकमत से लीलल बउसाव
हमर गाँव !

झाँक रहल खिड़की से
आँख - आँख
हर कदम फुलात,
झटहा से आम गिरे
निमकउड़ी आप भड़भड़ात
पसगयबत पाहुन के आगन में
छप्पर पर कउआ के काँव
हमर गाँव !

गइल कला बबुरा बुँट लादे

तेइस साल के अरसा भइल
कुतुबपुर के जतरा कइल
एक दिन मन में भइल कि जाईं
रहले जहाँ भिखारी नाई
मुख्य सड़क तक चकमक लागल
आप सूप जब ट्रेकर भागल
बाकी डोरीगंज के रस्ता
पहिले लेखा लउकल खस्ता
उहे घाट, लकड़ी के नइया
लोग उहे आ उहे खेवइया
नाव चलल बाकिर मोटर से
दियरो जल्दी कटल सफर से
घरवा उहे रहे खपरा के
रोखगर कइल देवाल उठा के
नया एक शौचालय लउकल
नए-नए गारल चापाकल
सरकारी अमला सब अइले

साथे पुलिस-दरोगा लइले
कैमरा अउर प्रकाश भिरा के
बरबस बाजा-नाच कराके
कला भिखारी के फिल्मइले
खइले-पीले, रोब देखइले
वंश के लइका जेह से आसा
पी के कइले अलग तमासा
आश्रम रहे अधूरा-आधा
कहत कि बा पइसा के बाधा
बहुते खिन्न, दुखीमन होके
लवटत रहीं कोइलवर होके
राह में बबुरा चँवर भेंटाइल
कबो चना से रहे जनाइल
कहलीं ना सोचलीं मन जादे
गइल कला बबुरा बुँट लादे ।

हो गइल होई

लाल आसमान हो गइल होई !
रात के जान जब गइल होई !

का पता भूख खा गइल या की
जरावल गइल दहेज बिना
शम्मा-परवान के कहानी में
साँच बलिदान हो गइल होई !

काल्ह शंबुक के हो गइल फाँसी
आज बाली मरा गइल होइहंन
ऊ जे हरिजन के गाँव लहकत बा
राम के आन हो गइल होई !

आदमी पर लगल बा पाबंदी
भेड़िया घूम रहल बा छुट्टा
अब त सँउसे शहर प बा शामत
उनकर आवान हो गइल होई !

फेर खतरा बढ़ल हुकूमत पर
कौम हलकान कर दिहल जाई
कबर शिवालय अउर मस्जिद में
देव-स्थान हो गइल होई !

खाद-पानी बनल खुदे तबहूँ
हाथ आइल ना एक दान जब
अब के हरवाह बो रहल हथियार
खबर मलिकान हो गइल होई !

विषखोंपड़ा के मन्तर

छू काली न्यू दिल्लीवाली
तोहर चरण न जाये खाली
पहिल डेग पंजाब बढ़ावा
भाई-भाई के दे अलगावा
दोसर डेग असम में किन्हां
बोड़ो आन्दोलन धरि दिन्हां
तीसर डेग प्रदेश में उत्तर
बाबरी मस्जिद राम-जनम-घर
चउथ डेग त्रिपुरा करनाटक
बन्दे-बन्द विपक्ष के फाटक
पँचई काश्मीर पर ताना
तना-तनी में ध्यान बँटाना
छठई राजस्थान में आना
रूपकुंवर के जिअत जराना
जात-पाँत, भाई-भउजाई
सँतई डेग बिहार भेजाई

आठ गरीबी, नौ बेकारी
सँउसे देश में छींट के मारी
दसम अशिक्षा, मंहगी ग्यारह
दक्खिन में हिन्दी के बारह

घूस-दलाली नेग-नेग पर
जुलुम-पुलिसिया डेग-डेग पर
'अगिन' छोड़ के धाक ज़मावा
पंचायत में दे उलझावा

मालदीव, नेपाल व लंका
पिटलक रंगदारी के डंका
रूस संगे शान्ती बतिआवा
अमेरिका से करज मंगावा

भूलल-चूकल अउर समस्या
जोड़ लिहऽ 'आई' कामछ्या
सच्चाई अउर ईमानदारी
चल घोनसारी, जर भनसारी

अन्तर-मन्तर बोगस करन्तर
पाँच बरिस पर मोहर मरन्तर
अबरो बार न जाये खाली
छू: काली न्यू दिल्लीवाली

इ्याद एहतरह

आवेला अकेले में तोहर इ्याद एहतरह
खाये के बेर जइसे कुकुर आके बइठ जाए,
बानी हरान जइसे रहऽ तू उधार से
दुत्कार दीले कतनो तबो बार-बार आए ।

तू गइलऽ घर से का कि सब आराम जा चुकल
सामान खुद लावे पड़ेला दूर हाट से,
आवऽ ना अबो देखऽ अब त साँझ आ गइल
गदहो लवट के आ रहल बाड़नसऽ घाट से ।

हर जगह हो रहल बा मिलावट के जाँच-बूझ
अइसन में रखल रिश्क, इश्क पास-पोस के,
हमनी बतूस भइल बानीं कनटरउल के
मिल लेब ब्लैक से अरे जब जेतना हो सके ।

अपनो विकास होत बा

जब खाय के रहल ना, ना पहिने के कुछ ठेकान,
बेपइसा भइल शहर में फुटपाथ पर मकान,
कुछ दिन त कटल केहू तरेह बेच के अखबार;
'बेचे' के न्यूज पढ़ के मगर भइल चमत्कार !

'कल सोना बिकल आज कारखाना बिक रहल,
होटल बा बिकत अउर घर के दाना बिक रहल,
घाटा के माल बिकल, नफावाला बिक गइल,
तुरते के खुलल बिकल, लगल ताला बिक गइल,
सरकार के सब चीज हो रहल बा प्राईवेट;
कर्जा ला बड़का देश के सब खुल गइल बा गेट !'

सोचलीं कि मुलुक जाके भाइयन से शेयर लीं
आ बाहरी लोगन के कुछ निवेश करे दीं !

अब गाँव में अपुन के ना बा कोई जायदाद,
हँ, बैंक में पूँजी बा तनिक शहर के आबाद,
ओही पर करज लेके बा हालत बदल गइल,
बा टी. वी., फ्लैट, कार, फ्रीज अउर मोबाइल,
बानीं जहाँ उहाँ बा मान आसमान पर,
बड़का समुझ उधार मिलत बा दोकान पर,
निकलीला सुबह घर से त जोड़ेला लोग हाथ,
लइकन झुकावेलनसऽ अदब से चरण में माथ
संस्थन के बादशाह बानीं बिना ताज के,
बाड़ी उहो सेकरेटरी नारी-समाज के,
करजा सधावेला नया करजा उठाइले,
सध पावे मूल ना जो त सूदे सधाइले,
सब्सीडी माई-बाप के कहिये से बंद बा,
बच्चा जे गरभ में बा, ऊहो लोनचंद बा !

देशे के जब ना बस बा 'उधारी' के मर्ज पर,
अपनो विकास होत बा भारत के तर्ज पर ।

उलटबाँसी

जन बिच मीन पियासी कबिरा !
सुनि-सुनि आवत हाँसी कबिरा !

काम करे से पड़े जाल में
कुछ ना करे से मस्त हाल में
महल उठावे, रहे टाल में
साधू पड़ले फाँसी कबिरा !

लइके में बुढ़वा हो जाये
चोर सेन्ह पर आल्हा गाये
बेईमान ईनाम कमाये
पापी सब संन्यासी कबिरा !

भारत के सरकार काठ के
देश हो चलल उपर साठ के
तबो सुआ ना पढ़ल पाठ के
गणिका रहे उदासी कबिरा !

जे जंगलात, पहाड़ उजारल
नदियन में अणु-कचड़ा ढारल
गैस रिसा जनता के मारल
ओकरे बा शाबासी कबिरा !

बरसे कंबल भींजे पानी
कहल कबिरा उल्टा बानी
कबले इहाँ समझीहें ज्ञानी ?
ई ह बात सियासी कबिरा !

राजा

[1]

राजा भइले नंग-धड़ंग !
दरबारी सुघरावे अंग !
कहस कि ई ह वस्त्र वैश्विकी
भारतीय के लागी तंग !
राजा भइले नंग-धड़ंग !

औरत सब के मुँह में गाली
लरिकन खूब बजावस ताली,
बुद्धिमान कन बहस के मुद्दा
मनई आम देखा के दंग !
राजा भइले नंग-धड़ंग !

[2]

राजा के चेहरा पर चेहरा !
बहुरूपियन सन सब कुछ दोहरा !
पल में गीत त्याग के गावे
पल में धन ला होय फफेहरा !
राजा के चेहरा पर चेहरा !

कबो मुखौटा धरम के लागल,
कबो बा धरती-राग में पागल,
वन संग वनवासियन उजारत
धनियन से बन्हवावत सेहरा !
राजा के चेहरा पर चेहरा !

[3]

राजा केतना दुखियारा बा !
जनता खातिर बेचारा बा !
घूमे से बा चैन ना ओकरा
सब सरकारे के असरा बा !
राजा केतना बेचारा बा !

राजा के कुनबा बा लमहर,
जात, दोस, ससुरारी, ममहर,
बैंकी नाता त बिदेस तक
भारत रहलो पर पहरा बा !
राजा केतना बेचारा बा !

[4]

राजा खाये में अलसाला !
एही से हरदम कुछ खाला !
खाये में परहेज ना ओकरा
जे कुछ मिले हजम पर जाला !
राजा खाये में अलसाला !

लोहा खाला, पत्थर खाला,
जंगल अउर जनावर खाला,
पी घललक नदियन के पानी
तबहूँ हरदम करे घोटाला !
अब त खाली देश बचल बा
देखीं कहिया चट कर जाला !
राजा खाये में अलसाला !

कारपोरेटी सीख

छोड़ऽ ई जंगल-पहाड़
आ हो जा तू नगरनवासी
आपन लोहा-सन पाहुँच में
मत बनूक लऽ वनवासी !

बाल्मीकि के देखऽ चाहे
देखऽ शबरी-केवट के
राम-भरोसे रहलन
ना लालच कइलन धन-दउलत के
खबरदार मत शंबुक बनिहऽ
तुरते हो जाई फाँसी !....

औरत तोर बिना कपड़ा के
भल लागेली, नाचेली
लइकन सब इसकूल ना जालन
लइकिन किस्मत बाँचेली
घुस आइल बाड़नसऽ गोरा
धरम बचइह संन्यासी !.....

तोहरा धरती के नीचे जे कुछ बा
ओह से देश बनी,
टाटा-बिरला अइहें तबहीं
तोहरो नयका भेष बनी,
भारत बन जाई अमेरिका
तू जइहऽ सेवे काशी !.....

मत आपन भाषा तजिहऽ
मत चाल-चलन बहकइहऽ तू
जल-जंगल-जमीन के चक्कर में
मत जान गँवइहऽ तू
आपन झंड़ा तिनपटिया ह
ललकी ह नक्सलवासी
आपन लोहा-सन पाहुँच में
मत बनूक लऽ बनवासी !

छन्दमुक्त

भूख

[1]

हमरा पास कम रोटी रहे
मनोवैज्ञानिक ढंग से
पेट भरे बदे
हम ओके टुकी-टुकी करे लगलीं
आ अइसन
तबतक करत रहलीं
जबले ओकर कुछुओ सिरजना बांचल रहल ।
याने अब
अपना मुट्ठी में
फुँक्का बा
बाकी दिमाग में
पूंजीवाद, गांधीवाद, समाजवाद
आ गिनावे खातिर
हजार भाववाद !
हँ नइखे त रोटी
जेकर तत्काल
जरूरत रलखऽ.....।

[2]

अइसन करऽ
ए लाइन में खड़ा हो जा !
हम कुछ आकर्षक नारा
लिखलावतानीं
फेर हम-दुनों मिल के
हल्ला करब
नारा लगाएब
पर्चा बाँटब
पोस्टर साटब
आ अगर बात बढ़ल
(जइसन कि अक्सरहां होला)
त एसेम्बली के गेट पर
कुछ करत-करावत
गिरफ्तार हो जाइब जा
राजनैतिक कैदियन के
जेहलो में बढ़िया खाना मिलेला दोस !
भूख अब सहात नइखे.....।

बदहाल बच्चा

[1]

फइल-फइल जा ताटे
तख्ती पर अच्छर
आ लउकत बा
गोल-गोल रोटी-सन
चकला पर,
भूख से
फुला ताटे सरसों
हर आँखिन में
मुर्गा बनल बानीं
पढ़ी कइसे
ठीक से ?

[2]

बाबू शराबी
भइया वहसी
जुआरी चचा
चारों ओर
गाँव में
लफंगन के राज बा
सुनतानीं
इहे हाल
देश से विदेश तक के
सोची ले
करीं केकर नकल
आवे अकिल
आ
अइसन बना दीं
जइसन
पोथी में
समाज बा ।

[3]

नानी के कहानी
राजा-रानी
इयाद बा जबानी
अपने लड़िकपन
बस भूल-भूल जाईला
केतना
रटवलन गुरू
शिवा, राणा, गांधी के
चाचा के गुलाब
अब कालीन में
उगाइला !

कापुरूष क्रांति

मधमाछियन के छत्ता में
अंगुरी घुसावल चाहत रहीं
एक संघे हजारन डंक
हम खड़ा रहनी
आ देखत-देखत
हमर अंगुरी सूज गइल
फेर फोड़ा
घाव
मवाद
आ अब सड़त अंग-अंग
हाय !
ना त हम पधमाछिये उड़ा पवलीं
ना मधे पवलीं
आ अब
जिअलो मुहाल बा !
एह घटना के कवनो नाम
देहल चाहब अपने ?
'कापुरूष क्रांति' ।

का अब ?

का अब
कल्पना में मिली
साफ पानी !
ताजा हवा !
लोक कहानियन में
नैतिक राजकुमार !!

का
काल्ह केहू समझी
एतना बड़ धरती के
उपज बढ़ावे में
छोट केंचुआ के मेहनत
अकिल के समुन्दर में
बून-भर सियाही के बिसात ?

का
झिंगुरन के किर्र-किर्र
आ
चिड़ियन के चह-चह में
साँझ-बिहान
पहिचानल जाई

जब
ना होई करिया बोर्ड
ना उज्जर खल्ली
ना फुर्सते
कि मास्टर
खोज लइहंन
लइकन खातिर
शब्दन के कबाड़खाना से
इचिको-भर
बँचल
उनका पसन के चीज
छुट्टी ?

का करीं ?

जबकि
समूचा दुनिया
ताकतवर बम के मर्जी पर बा
आ
रिमोट कन्ट्रौल
खिलौना-सन
पराया हाथ

जबकि
अकाल बा रोटी के
आ
आपन
मेहनतो नइखे
अपना साथ

जबकि
बँटत जा रहल बा
आदमी
जात
धरम
आ भाषा संग
बारीक टुकड़न में

जबकि
ऊब मेटावे खातिर
हो रहल बा हत्या
मनोरंजन बदे
बलात्कार

जबकि
अपनहीं बानी
ना रहला नियन
आ तू त
ओहू से कमतर

अइसन में
सोचतानी
अपना प्रेम-पत्र के
का करीं ?

लकड़बघ्घा

मुन्ना
अब
पतंग ना उड़ावे
ना उधम मचावेला
गुल्ली-डंडा में ।
'रेन-रेन गो अवे' भी
जोर-जोर से ना पढ़े
ना पड़ोसी अंकल के
टॉफी खातिर तंग करेला ।

साँझ होते
घुसल चाहेला
माई के गोदी में,
बिना डाँट के
गट-गट दूध
उतार लेवेला पेट में,

ना लोरी
ना कहानी
ना बहिनन साथे शैतानी !

ओकर साथी
आवेलनसन सहमल-सहमल
कानो-कान
बतितआवेलनसऽ फुसुर-फुसुर
फेरू भाग जालनसन
अपना-अपना घरे ।

अब
ना रिगावलनसऽ ऊ बुढ़वन के
ना
सुरक्षित महसूस करेलनसऽ
पापा के पास !

दादी डेरवावत त रहस
झूठ-मूठ कवनो हउआ से
उनको का पता
कि
सचहूँ कवनो लकड़बघ्घा
एह तरे
उठा ले जाई
मुन्ना के..... !

भेड़िया के नथुना घुमा देव

कइसन अचरज के बात बा
कि चोर भीड़ में चोर ढूढ़ रहल बा
पेटरउल से आग बुझावल जाता
आ
परकटल कबूतर
आसमान में उड़ावल जाता
शांति खातिर !

कह ना सकीं
केतना कारगर होई
नारा, जुमला आ बेयान के ई बइसाखी
लंगड़ात सद्भावना के
मंजिल तक पहुँचावे में
जबकि
राहो में
बारूदी सुरंग बिछावे के
साजिश जारी बा ।

ऊ

समुझताड़न
पालतू भेड़िया
पोसेवाला के ना मारे
आ भेड़िया
निडर होके सूंघ रहल बा
आदमी के मांस !

साफ जनाता
ओकर निशान
रंग, भाषा, जात, धरम
के झगड़ा
आ
देश-बिदेश के रगड़ा में

बाकी हमनी का
वोट आ सरकार
बहस आ सेमिनार में
ओकर ठौर तलासत
थाकत नइखीं ।

इन्साफ के आसन
होके
बहेवाली हवो
ओकरा ओर इशारा करता

जरूरत बा
कुछ साहसी शिकारी
भेड़िया के नथुना
ओने घुमा देव !

बुधिया के अखियान

बुधिया छपाक् से
अपन टीना उलिटलस ना
कि
पिअर फोस, फुटकाइन
कठेस आ गीला-गीला
मइला पसर गइल जमीन पर !
ऊ पच् से
राख पर थूकत
लटिआइल माथ
खजुआवे लागल ।
ओकरा गोझनवटा में
कुछ सुहुर-सुहुर चलत बुझाइल-
पिलुआ !
छी-छी
गोल-मटोल, लोढ़ा अइसन,
पोंछवाला पँखहा फतिंगी
अन्डर बोय फुटत महक में
कइसे खदकत रलनहंसऽ ई
किसिम-किसिम के ?
हऊ सेठ के संडास के ह,
हइ बाबूसाहब के टट्टी के
ऊ किरानी बाबू के पैखाना

आ ई इसकुलिया लौज के शौचालय के !
सब दनदना के देह पर चढ़े के तइयार
जइसे ई पिलुआ ना–
लोग होय लोग
मरद लोग !
जीभ में पानी
आँख में माड़ी
अकेलुआ जान के
लुग्गा लूटे के तइयारी !
ओकरा सुनल रामायण-महाभारत
एक-एक करके इयाद आवे लागल
सीता तिले आग में
खड़ लउकस
भारी गोरे जंगलात में जात
भा रावण के पाँजा में छपिटात !
अहिल्या पथरा गइल रहस
दुरपति पाँचो भतार लेले
दुरजोधन कन लंगटिआइल सोचस–
आखिर खुदे हारल
दोसरा के दाँव पर लगावे के का तर्क रखता भला !
ना ! ना ! ना !!
बुधिया अखियान के जोश में
अपना झुल्ला चिर्री-चिर्री कर घललस ।
ओकरा बुझाइल–
भोपाल के गैस-टंकी रिसे लागल बा
अब स्टोव फाटी
आ, ऊ तुरते लहक जाई..... ।

रमुनी चिरई बनाम हम आदमी

धान के खेत में
अकेलुआ जान के पकड़ाइल
रमुनी चिड़इया
गोहार लगावत रहल–
'घोड़वहवा भइया रे !
हथियहवा भइया रे !
बरिअतिया भइया रे
पुतली पताल मोर खोंतवा रे बकटेंव-टेंव
रोअत होइहें मोर बचवा रे बकटेंव-टेंव
सब मिली खइलस धनवा रे बकटेंव-टेंव
हमहीं पड़ब फाँसी रे बकटेंव-टेंव ।'
लोग सबकुछ देके जान बचावेला तइयार
बाकी राजा के जोम के आगे
हई नन्हबुटनी के गोहार के का बिसात ?

राजा मार के खा गइलन फरगुद्दी के
बाकी पचल ना
पैखाना गइलन त फुर्र से निकल के
पेड़ पर बइठ रिगावत भइल–
'राजा के लाल..... देखलीं !'
आ–
'पाँच सेर के लिट्टू खइलीं
तोता अइसन मीत खइलीं
तोहरे के खात बड़ा देरी ?'
के जोम में निमन-जबून लील के छउकत
बेंग राजा !
नाऊ-रूप में हम आदमी हईं
हथियार हाथे में बा
पेट चीर के बहरी आवत
केतना देर लागी ?.....

एगो पलटत पन्ना

साँचो बलिहारी रहे ओह बूढ़ के
जे जीते जीव देह पर निमक छिरिक के
गाय से चटवा लेलक चाम
जेमें ठठरी ओकर काम आवे केहू के ।

कइसन होइहें ऊ दूनों बेकत
जे अपने हाथे अपना लाल के
खँरात पर चढ़ा के
चीर घललक लोग बीचो-बीच
जे में केहू अनराज होके दुआरी पर से जावो मत ।

बाझ का हाथ से कबूतर बचा के
बदलइया में अपना के
तउल देहल, का हलुक बात बा ?

ऊ राजा होखस भा मसान के नोकर
आसान नइखे
बेटा के लाश से कफन छीन के
तनी-भर सिसकियो ना लेल !

आ
गते-गते अपने अपना गतर-गतर के
माँस गला लेल,
पेटो काट के खिआ ना पवला के
अलचारी में
एकलौता रकटुआ के
दुआरी-दुआरी कौरा खाये के छोड़ देल
भा
पूरा जिनगी बन्हकी रख के
सूद में
बेटा के नाँवे गुलामी खरीदत
नएतुन मेहर के देह पर
कफन-अस मरकीन देके
ब्लड-बैंक के लाइन में
खुद अपन खून खात
ई मुर्दा मतिन जिअत लोग !

आव पलट दीं अब पन्ना
ऊपर अइसन
इनको परेछेया के
इयाद रहे
अगिला पन्ना पर
मत दोहरावो केहू ई ।

का बाँचल रहे ?

हम देखले रहीं
नौमन के लंगड़ी धोबिन
हबड़ा के पुल
बुलाकवाली बीवी
हुसेन के दुलदुल
जवना
शीशा के छवमुँहा बक्सा में
ऊ
दउड़ल रहे
फेनुगिलास[1] तक
बाकी
बहुते पीछे छूट गइल
अब एतना
कि
जब हम
सात साल के पोता के
ब से बाइस्कोप
समुझावे चहलीं

त
ऊ
हैरत से
हमर मुँह तकलक
फेर
प से पिक्चर
फ से फ्रीज
ब से ब्रोकर
म से मोटर
आ
भ से भोंपू मारत
चल गइल
टी. वी. में
कारटून देखे ।

मकई के बाल खातिर
हाथ से फोटू चलावत
ओह
सिकिया पहलवान
का बारे में
का बाँचले रहे
जे
आगे
बतइतीं हम
बबलू के.....?

1. ग्रामोफोन

आखिर कबले ?

अब
साइते कहूँ
देखाई दे जाला
ठेहुना तक लुंगी
कान्ह तक फतुही
आ गीलट के बाली
पेन्हले
ऊ डुगडुगीवाला
जेकरा
डंटा के फटकरला
आ
हाँक लगवला भर से
छाती पर सफेदी
आ
भर देहे
करिया केस लेले
ऊ जंगली जनावर
अपना नोहदार पंजा से
चलावत रहे चरखा
खेलावत रहे लइका
आ

करे लागत रहे झगड़ा
सास से
पतोह बन के !

हमनी हँसत-हँसत
लोट-पोट हो जात रहींसऽ
अपनही घर के
ओकरा हाव-भाव के
आइना में
देख के ।

ऊ
दुब्बर बुतरूअन के
कालू के पीठ पर बइठा के
'झल्लर-मल्लर
दम्म-मदार'
भी
करावत रहे
जेह में
बबुआन तगड़ा होय
भले बनल रहे ऊ
सिकिया पहलवान
मइल-कोंचइल ।

हम
धरमतल्ला
कुतुबमीनार
जुहू के किनारा से
कस्बा के मेला-ठेला
आ

गाँव के सड़क-गली तकले
ओके बहुते खोजलीं
ना मिलल ऊ
ना
ओकर देखल तमासा !

का पता
भाग गइल भालू
फूट गइल डमरू
भा
केहू फइला के मांगेवाला
चिथड़े ले उड़ल !
खुदहूँ
जा सकेला ऊ
रेलगाड़ी के छत पर
लदा के
दिल्ली आ पंजाब
पीछे-पीछे
गँहेट बन्हले लइकन के
अलविदा कह के !

आखिर
कबले ढोअत फिरित
खाली पेट
घर के नाम पर
हरदम माथे चढ़ल
आपन
सिरकीवाला बासा ?

[1]

अलीबाबा चालीस चोर

अबकी
चालीस चोरन में
कुछ त
चतुराई से सरदार के साथे रहन
जइसे रहेला
शेर के साथे सियार
जूठ-काँठ में हिस्सा खातिर,
कुछ एह डरे कि
बिलाई के गर में
घंटी के बान्हो ?

सरदार कन
खुदे सब हरबा-हथियार रहे
बाकी दोष
ऊ अलीबाबा पर मढ़त जात रहे ।

'खुल जा सिम-सिम' के जगहा
ओकर नया कोड रहे–
'आजादी आ लोकतंत्र'
ऊ तेल के कुप्पी में ना
खाली कुप्पी लेले आइल रहे
घोड़ा पर ना, मीडिया पर सवार रहे !

मरजीना के डाइगर डांस
भला कइसे काम आइत ?
जब भाइए फूटल रहे
अली कबले बच पाइत ?

अफगान के पियासल
कुआँ के साथ बा
नमरूद जीतल
खुदा मात बा !

[2]

जीअता हमरा में

हमरा भीतर
गंगा-यमुना नियर
एगो नदी बहेली
नाँव ओकर
कुछुओ हो सकेला
नील, वोल्गा
टेम्स या दजला-फुरात ।
इन्हन के किनार पर
पनपल सभ्यतन में
चाहे जवन नाँव ल–
सिंधुघाटी, मेसोपोटामिया
या सुमेरी अक्कादी
फइलल बा
हमरा अन्दर ।

हम अखियान करतानी
सिकन्दर, चंगेज आ
हलाकू के चढ़ाई
देखतानी
बेबीलोन के खँड़हर
बाकि आँखिन में
झूल रहल बा
सात अजूबा साथे
एगो बगइचा
जहाँ बइठल बिया
अलीफ-लैला के दोशीजा शहरजाद
आ कह रहल बिया कहानी
दू हजार रात से !
हमरा सोझा
अलीबाबा-चालीस चोर
घूम जा ताड़न
जरता अलादीन के चिराग
आ देखाई दे तिया
आधा नकाब पेन्हले
एगो बहुते सुन्नर लइकी
जुबैदा ।

नमरूद
खुदाई के दावा कर रहल बा
आग में बाड़न हजरत इब्राहीम
गाढ़े नीने सुतल बा सब
इस्लाम के बुजरूग हस्ती
ओने घूमताड़न
फकीर के भेष में
खलीफा हारूण रशीद

सीअऽता अन्दर मोची
कासिम के टुकी-टुकी लाश
हम देखे लागतानी
दुनिया के पहिलका कलेंडर
पढ़े लागल बानी
जीए के कोसिस में लिखल
गिलगमेश के सिलेट
भरोसा बा,
बगदाद जीअत बा हमरा में
जइसे
मर-मर के जिअतार बा
मिश्र, यूनान, रोम, चीन
आ भारत !
खुसी में
मार-धाड़ के बाजार से
बचावल
संस्कृति के ई गुर
हम लइकन में
बाँटे लागल बानी..... ।

अठगोरवा

कहीं काटत, कुटकुटात बा
हम, तू, सभे महसूस करता ओके
बाकी काम के हड़बड़ी में
हगुआ के तोप देता
आ ओने ऊहो
आपन काम करत रहता हाली-हाली ।

संस्था के नाँव टाँकल
कहावेवाला साहित्य भा कला के फरेम में
साटल फोटू
अबगे पहचनलीहं !

हमरे अलान के लउकवा के तुमड़ी
छरकाह बँसवरिया के डंटा
सावन-भादो ला मू-मू के जोगावल जरना
के फूँक-फूँक के तापत
एक बेर फेर हमरा मेहर के डाँट-डपट के ई
असलकी घीव में के पुआ खाई
आ लइकन ओकरा धुँई में के राख-चाट के
सूत जइहंन सऽ ।

परसाल ले इहे नू डमरू डमडमावत
मुअल मुरदा के भखरल हड्डी से
हमनी जीअत लोगके डेरवा-डेरवा के
अनाज-पानी से अपन झोरी भरले
सँउसे भीड़ के मरदे-नियर नजर बन्न क के
अलोपित हो जात रहे !

अब ना मानब,
सभे ठगाइल बा ए चिन्हार से
रेड़ी दे तानीं, नेआव होय के चाहीं
ई का कि हमनी के कमीनी.....
देखतानीं मालिक एकर ठगई ?
आउर ना त हमनी के मेहर-बेटी.....

ना भगबऽ लोगन ?
गँहेर बन्हले चल आवतारऽ देह पर अड़राइल,
साधू-सन्त का कहवलखऽ रे ?
ओकर कुछ कइल अमरख ना माने के
आ ई त.....
हमरा नाना के समधी के भतीज-दमाद लागलन !
छोट जात के पतोह साथे धरा गइल रहस
त साधू हो गइलन ।
सुन हेने ! निमन मोका पर भेंटा गइल बाड़ऽस
सब गोरा
चलसऽ बेगारी में !
मंत्री जी तोहनिए ला अकाल देखे आवताड़न !
मैदान साफ क के स्टेज बान्हेला होई
ना त सब जमीन छीन लेब
त पटपटा के मर जइबऽ लोग सारे !
सुनले रे ?

'भें-भें-भें.....'
मालिक से हमनी के ईहे नाता बा
ऊ भेड़ियर, हमनी भेंड़ा
आज से ना
खानदान-दर-खानदान से !
हमनी के बाप इनका बाप के सार रहलन
दादा, इनका दादा के
आ उनकर दादा, इनकरा दादा के दादा के
कबो दू भाई आपुस में झगड़स
त ई लोग दूनों के डाँट के चेंट गरम कर लेवे
आ, ओ लोग के गरमी ठंढा !
बनरवा कादो अइसहीं बिलइयन के
हिस्सा लगावे बइठल रहे ।
सभे चुप बा
केकरा भखौती उतरवावे के लिखल बा ?
गुंडा पोसले बा,
चोर बसावेला,
डकैती में त ओही दिन नू पकड़ाइल रहे
त दरोगा जी छोड़वइलन ।
बजार के सब दउरी-दोकान त एकरे बा
के, कवना कोना जाई ?
कोर्ट के मजिस्टर एकर बहनोई बाड़न
मंत्रीजी मजिस्टर के बहनोई
असहीं लड़ पर लड़ जोड़त
सरकार त सरकार
सात समुन्दर पार ले
एकर लगाइत बा जी !
जानुक करमी के लत्तर होय
'जड़ ना पत्ता
सगरो अगरधत्ता !'

फेर कपड़ा के भीतर कुलबुलात बा,
देवल पर मन अहथिर करब ।
अतहते होत जात बा,
धरम नइखे,
फेर भगवान के जनम होई ।

होई त का होई ?
ईसा सूली पर चढ़ीहंन
नबी खदेरल जइहंन

आ रावण जिअते रही
कबो कंस
कबो हरनाकुस
त कबो
के जाने का-का दू बन के ।
वरदान जे हइक !
त, भगवान से ईहे नू बलीठ भइलनसऽ ?
ई त अजबे बात चनरल !
हमनीए के खून से जनमल
चमड़ी के रंग लेले चमड़ी में चिमटल
गतर-गतर सोंढ़ धँसवले
आप-सुप चिहुटत हूब !
बाप रे बाप !
सँउसे जिनगी नाप लेलक ई बामन !
तबहूँ कादो उठल डेग खालिए हइक !

देह गनगनाता
सुनीले, जै टुकी करब, तै गो सोलहग
तइयार मिली ई !
मेहनत अकारथ जाई

जले रोआँ-रोआँ ओसा के
टुकी-टुकी बीन ना लेहब जा एकर हाथ-गोर
आग रखऽ !
लगे आवऽ !
बिहिंया-बिहिंया के हेरऽ लोगन एक-दोसरा के
ना त गिरह पारलऽ
कि आल-औलाद ले
देह पर हेरा ना चढ़े दी
ई
अठगोरवा..... !

चिंउटी

[1]

चिंउटी आगे
चिंउटी पीछे
लमहर कतार में चिंउटी
अनुशासित आ संगठित
ई जुलूस
खाली मांग खातिर
कागजी ज्ञापन लेले ना
बुझला
कवनो ठोस प्राप्ति का ओर
बढ़ रहल बा ।

[2]

ऊ अपना से भारी बोझ
ढोअत चिंउटी
ललकार रहल बिया
आदमी के हिम्मत के !
गिरल-चढ़ल, चढ़ल-गिरल
गिनस ऊ
जे थाक के बइठ गइल होखे
चिंउटियन के चढ़े के बा
आगे बढ़े के बा
सोझा आइल परिस्थितियन से
लड़े के बा
बस ।

[3]

तिनका पर
पानी के धार में चिंउटी
पहाड़ के चोटी के
कगार पर चिंउटी
गोड़ के नीचे
सिर के ऊपर
चिंउटी बिना कवनो
जात, धरम, भाखा आ
क्षेत्र-भेद के
हर जगेह
मेल-भाव से बिया !

[4]

केतना परेशान
करेली चिंउटी
जब हम
लापरवाही में
बिछौना ना झाड़ीं
जूठे मुँह सुत जाइला !
बड़ भइला से का होला ?
चिंउटी सावधान बच्चन के
तलवा से
बहुते घबड़ाली ।

[5]

बरखा के आसार
भाँप लेवे ली चिंउटी
बरसात आवते
मय अंडा-बच्चा के
जगह बदल लेवे में
कोताही ना करस ।
चिंउटियन के शब्दकोश में
साइत भाग-भगवान के
बखेड़ा नइखे
आइल खतरा से जूझल
आ भावी खतरा से बांचल
जानेली चिंउटी ।

[6]

लाल चिंउटी
करिया चिंउटी
छोट चिंउटी
बड़ चिंउटी
हई नस्लवाद
रंग-भेद
आ अगड़ा-पिछड़ा के हिसाब
अपना कन बा
चिंउटियन के दुनिया में
ना !

[7]

सियार के मउअत
ओ के शहर का ओर ले जाले
चिंउटियन के पांख
आग का ओर
बाकिर ई दिशा-भ्रम
सामान्य विकास ना
बेमारी ह साइत !

[8]

चिंउटी पकड़लीं
चुटकी से मसल देलीं
छुट्टी !
बाकी सुनीले
सोंढ़ में पइसल
चिंउटी
हाथियो के
माल घालेली
बाप रे !

मंत्री के बेयान

हम
संविधान हाथ में लेके
बेयान दे तानीं
कि
बकरा कटायेल बा ।

कटल बकरा के धरम ह
काटल कसाई के करम ह

सभ्य आदमी
धरम-करम के ममिला में
चुपे रहेला
तबो हम बेयान दे तानीं ।

बकरा खातिर
हमरा बहुते दुख बा
राख लेब बन्न कमरा में
दू मिनट के मौन
काल्ह मांसो ना खाइब

बाकी
तत्काल मजबूरी बा
गइल जरूरी बा
बकरा से हमरा
का अदावत बा ?
कसाई कन
आज दावत बा..... ।

मरल एगो फूलकुमारी के भूख से !

जब उनका मोताबिक
बिहार के अठारह जिला
दहार के चपेट में रहे
(बाकी सुखार के)
त
अइसनो में
पेड़ के डाढ़ पर टिकल
एगो औरत के
लइका भइल रहे
आ,
ऊ खुश होके बोलले रहस कि–
'संयोग से एक भइल
जल–थल–नभ के सामने
हम किरिया खातानीं
कि
दोसर भले कवनो कारण बने
(भा बाढ़े जेतना के लील जाये)
बाकी भूख से केहुए के
मरे ना दिआई !'

तब से
जाने केतना जहर खाके मर गइल होइहंन
पानी में डूब के
साँप के कटला से
भा
हैजा आ बोखार से
बाकी भूख से ना,
आ
उनकर कसम
अपना जगेह कायम बा ।
बाकी
तूहीं
कइक दिन से भूखे रहत
बाँझ-बिधवा
अपना झोंपड़ी में मरल
पावल गइलू फूलकुमारी !
आ
बे पर के खबर उड़ गइल
कि
तू भूख से मरल बाड़ू ।

गाँव के लोगो
ईहे कहत रहे
कि तोरा घरे एको छँटाक अनाज ना रहे
आ खुद्दारी एतना रहे
कि
अदमी त अदमी
भगवानो कन
तू कबो हाथ फइलावे ना गइलू ।

बाकी उनकर कहनाम बा
कि
तोहरा पास
अइसन कौनो सबूत नइखे
कि तू भूख से मरल बाड़ू !
मरे से पहिले
तू कौनो नेता भा मंत्री कन
गोहार लगा सकत रहऽ
कर सकत रहऽ
पटना, दिल्ली जइसन बड़ शहरन में
प्रेस-कान्फ्रेंस
आखिर टी. वी. के
कौना चैनल में
मरे से पहिले
या बाद में
खबर बनलू तू
ई त बतावऽ ?
तबे
सही दिशा में
शुरू हो सकत बा
तोरा भूख से मरे के पड़ताल
ना तऽ
गाँव के मुखिया कही
कि
कै दिन से तोरा छींक आवत रहे,
अफसरो एही बात के पूठ करी
कर्मचारी के हवाले से,
आ
सरकार के भंडार त
पहिलहीं से

अनाज से भरल बा
ऊ काहे अपना रेकार्ड में
भूख से मरे दी तोहरा के ?

मरियो के
विपक्ष के हाथ के खेलौना
मत बनऽ फूल कुमारी !
मतदान नजदीक बा
आ
खड़ा बाड़न ऊ सत्ता-पक्ष से ।

समय भले उनका के
झूठा साबित क दे
बाकी
सी.बी.आई. के रपटो
आखिर ईहे होई
कि
तोरा झोंपड़ी में चूहा रेंगत रहे
लमहर कतार रहे चिऊँटियन के
आ
ई दूनों
उहँहीं होले
जहाँ
खाये के कुछ होला.....।

तैयब हुसैन पीड़ित

प्रमाण-पत्र में नाम : मुहम्मद तैयब हुसेन
जन्म-तिथि : 16 अप्रैल 1945ई.
जन्म-स्थान : ग्राम-मिर्जापुर, डाकघर- रामगढ़ा, (द्वारा-बसन्त), अंचल-गरखा, थाना आ स्टेशन-अवतार नगर, जिला-सारण (बिहार) ।
माता : स्व. हदीसन
पिता : स्व. मोहम्मद इसहाक
शैक्षिक योग्यता : एम. ए. (हिन्दी), पी-एच. डी. (भिखारीठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व), शिक्षा, पुस्तकालय विज्ञान, नाटक आ फिल्म में क्रमशः डिग्री, डिप्लोमा, प्रमाण-पत्र ।

प्रकाशित पुस्तक : मौलिक

हिन्दी :
1. भिखारी ठाकुर (विनिबन्ध), प्रकाशक-साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2008ई.
2. लोकनारायण (नाटक), प्रकाशक-'अभिव्यक्ति', कोटा, राजस्थान, 1999ई.
3. एक गुमशुदा इतिहास (नाटक), प्रकाशक-शब्द संसार, न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पटना, 2009ई.

भोजपुरी :
1. बिछऊँतिया (कहानी-संग्रह), प्रकाशक-एक प्रकाशन, पटना-4, 1974ई.
2. आपन आपन डर (एकांकी संग्रह), प्रकाशक-शब्द संसार, न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पटना-6, 2009ई.
3. ईदगाह से आगे (बाल एकांकी संग्रह), प्रकाशक-शब्द संसार, न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पटना-6, 2009ई.
4. भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त रूपरेखा (साहित्येतिहास), प्रकाशक-शब्द संसार, न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पटना-6, 2004ई.
5. भोजपुरी कविता के सामाजिक परिप्रेक्ष्य (आलोचना), प्रकाशक-शब्द संसार, न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पटना-6, 2008ई.
6. सुर में सब सुर (गीत, गजल, लोकराग), प्रकाशक-शब्द संसार, न्यूअजीमाबाद कॉलोनी, पटना-6, 2011ई.

7. अनसोहातो (कविता-संग्रह), प्रकाशक-शब्द संसार, न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पटना-6 2011ई.

सम्पादित : 1. अजब (हिन्दी-भोजपुरी, गद्य-पद्य संग्रह), प्रकाशक-बौद्धिक विकास मंडल, गोपालगंज, 2004ई.

2. एक पर एक इगारह (एकांकी संग्रह), प्रकाशक-शब्द संसार, न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पटना-6, 2009ई.

3. रंगमंच पर मॉरिशस (मॉरिशस के एकांकी त्रय) प्रकाशक-अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना-6, 2010ई.

4. भोजपुरी नाटक (तेरह प्रतिनिधि नाटक आ एकांकी), प्रकाशक-नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, 2011ई.

पुरस्कार/सम्मान :

1. भोजपुरी विकास मंडल (सीवान) से 'बिछऊँतिया' किताब खातिर 'राजमंगल मिश्र पुरस्कार'
2. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) से 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' 'भोजपुरी कविता के सामाजिक परिप्रेक्ष्य' किताब खातिर
3. अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन (पटना) से 'रघुवंश नारायण सम्मान'
4. भोजपुरी भारती, ढोंढ़स्थान (सारण) से 'भोजपुरी भारती सम्मान'
5. अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद (लखनऊ) से 'भोजपुरी शिरोमणि' आ 'भोजपुरी भास्कर' सम्मान
6. बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् (पटना) से 'लोकभाषा साहित्य सम्मान'
7. विश्व भोजपुरी उत्थान कल्याण समाज (कोलकाता) से 'भिखारी ठाकुर अवार्ड'

आजकाल : जेड. ए. इस्लामिया कॉलेज, सीवान (जयप्रकाश विश्वविद्यालय) से मई 2005 में हिन्दी प्राध्यापक-पद से सेवा-निवृत्त होके 'टी. एच. ठौर', न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पो.-महेन्द्रू, पटना-800006 में निवास आ साहित्य-संस्कृति क्षेत्र में सक्रिय ।

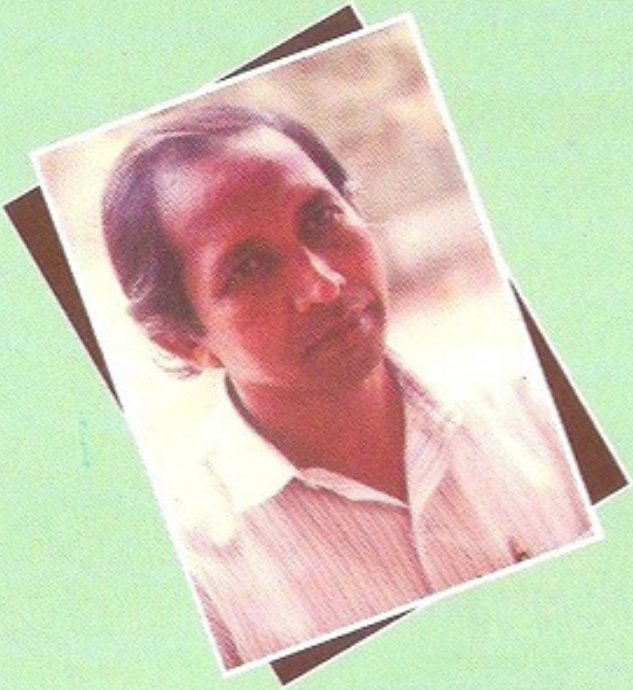

शब्द संसार
पटना - 800006